सम्पादक की कलम से

अनपढ़ो को शिक्षित करो

वैसे प्रत्येक मानव शिक्षित होना चाहता है किन्तु परिवेश यदि शिक्षा का मिल जाय तो शिक्षित ही नहीं सुशिक्षित होकर व्यक्ति अपना–अपने परिवार, अपने समाज, अपने गाँव, शहर, अपने प्रदेश, अपने देश, के लिये एक असेट बन सकता है, और कई सक्षम परिवार एसेट बन गये है । यह असेट स्वंय के लिये परिवार के लिए ही उपयोगी हुई है। अपने समाज, अपने प्रदेश, अपने देश, के लिए बहुत ही इन इन गिने, चुने शिक्षितों की गिनती शामिल हुई होगी। किन्तु अनपढ़ तो उसकी सीमा व समझ व समझ के अनुरूप ही अपन अपने परिवार का पालन पोषण बड़ी कठिनाई से करने हेतु मजबूर है । ऐसे अनपढ़ को शिक्षित करके राष्ट्र की एसेट बनाने धरातल पर सरकारों को अभियान चलाने पर ही निर्भर होगा ।

हाँ सरकारे भी शिक्षा का महत्तव अच्छी तरह समझती है, और सरकार बनने के पहले हमारे प्रजातंत्र की राजनैतिक पार्टियाँ शिक्षा के लिए समुचित वादे भी करती है, प्रचार–प्रसार भी प्रायः करती है । किन्तु जब सरकार बना लेती है तो उनकी प्राथमिकतायें कोई और होने लगती है। फिर भी शिक्षा के लिये सरकार के लोग प्रचार–प्रसार के लिये बाते करते है, झूठे आश्वासन भी देते है, पर शिक्षा की समुचित दूरगामी शिक्षा नीतियाँ नहीं बनाते। शिक्षा के लिए बजट प्रावधान भी खाना पूर्ति करने लायक आंवटित करते है। परिणाम देश भर में निरक्षर लगभग 20 प्रतिशत् से अधिक होंगे अर्ध शिक्षित भी लगभग 30 से 40 प्रतिशत् होगी, जिनके अभिभावकों के पास धन की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है, उन्हें तो अनपढ़ या अर्धशिक्षित रहने की मजबूरी है। इस मजबूरी का अंत करने हेतु इने–गिने राजनेताओं ने कदम उठायें है । केरल सरकार ने अपने राज्य में सबको शिक्षित करने की नीतियाँ बनाकर बजट दिया । इसी प्रकार विगत 4.5 वर्षों से दिल्ली की केजरीवाल सरकार भी शिक्षा का महत्व जानकर सबको शिक्षित करने के लिए अपनी शिक्षा नीति बनाकर बजट का एक चौथाई भाग याने 25 प्रतिशत् से अधिक राशि शिक्षा के लिए आंवटित की व दिल्ली के नागरिकों को अनपढ़ नहीं रहने के लिए ठोस उपाय प्रारम्भ कर दिये। लेकिन केन्द्र व अन्य राज्यों में ऐसा नहीं हो रहा है।

जब मुरली मनोहर जोशी मानव संसाधन मंत्री थे। उन्होंने ''सर्वशिक्षा अभियान'' प्रारम्भ किया था, और इसके लिए बजट प्रावधान भी कराया था, किन्तु प्रशासन की रूचि कम होने के कारण यह अभियान प्रचार–प्रसार तक सीमित रहा और अब तक की सभी केन्द्रिय सरकारों ने यही व्यवस्था जारी रखी । परिणाम अनपढ़ों को शिक्षित होने का अवसर ही नहीं बन पा रहा है।

जब शिक्षा की बात आती है तो वैज्ञानिक आधारों की शिक्षा नीति के बजाय पोंगा पंडित शिक्षा नीतियों पर बात चलने लगती है। यहाँ तक जिस युग का पता या प्रामणिक इतिहास ही नहीं उसकी उल–जुलुल बातें करने में सरकार के नेताओं की रूचि होती है, तॉकि वैज्ञानिक आधारों की शिक्षा नीतियाँ ही नहीं बन सके और अनावश्यक की चर्चा से टाइम पास कर लिया जाय । देश के सभी नागरिकों को शिक्षित होने का अवसर ही नहीं दिया जाय, तॉकि शारिरिक श्रम मूलक कामों को अनपढ़ों से आसानी से कराया जा सके ।

सामाजिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतीराव फुले ने भी अपने कार्यकाल में शिक्षा का महत्तव समझा था, और शिक्षा के लिए अपने परिवार सहित सबको झोंक दिया था परिणाम स्वरूप अश्प्रश्यों, शूद्रों, महिलाओं का शिक्षा पाने के द्वार खुले इसी का परिणाम है इन सभी वर्गों ने शिक्षित होकर अपना–अपने परिवार, अपने गांव, समाज, प्रदेश, देश का नाम रोशन कर दिया है यह फुले दम्पत्ति की ही देन है कि जिन्हें शिक्षा पाने का अवसर ही नहीं था वे हमारे देश के कर्णधार तक बनने लगे। मुख्य न्यायधिश, राष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री, सांसद, विधायक अब इन्हीं वर्गों के नागरिकों को बनने का अवसर मिला है। फुले के इस उपकार को कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

सरकार से अपेक्षा है कि फुले आदर्शों की समझ बनाकर देश के सभी नागरिकों को शिक्षित ही नहीं प्रशिक्षित, उच्च शिक्षित, शत्प्रतिशत्, को करने हेतु ऐसी शिक्षा नीतियां बनाये और शिक्षा को व्यापार–उद्योग की जकड़ से निकालने हेतु रोजगार मूलक निशुल्क शिक्षा की नीतियाँ बनाकर धन का आवंटन करे ताकि कोई अनपढ़ ही नहीं रह पाये।

महात्मा फुले के 129 वाँ परिनिर्वाण पर स्मरण ।

रामनारायण चौहान

क्या आप जानना चाहोगे?

भारत में अंग्रेजी राज आने के पहली सामाजिक एवं मानवीय जीवन अप्रश्यता अंधविश्वास पाखण्ड, ब्राह्यमणवाद, धर्मान्धता अशिक्षा वर्णवाद जैसी बुराइयों कुरीतियों में जकड़ा था ।जिसे सुधार कार्यक्रमों उवं कानूनों के माध्यम से मानवतावादी समतामूलक समाज रचना का अध्याय प्रारम्भ हुआ। हमें यह जानना चाहिए कि :–

इस प्रकार अंग्रेजो का शासन आने से पहले ब्राह्मण तथा तत्सम ऊँची जातियों को छोड़कर बहुसंख्यक जनता अत्यंत कष्टदायी, अपमानजनक और घटिया स्तर का जीवन जी रही थी ।फिर भी आर्थिक तथा सामाजिक विषमता पर आधारित समाज–व्यवस्था के विरूद्ध तत्कालीन जनता ने विद्रोह क्यों नहीं किया? इस विवशता का मुख्य कारण था हमारी समाज–व्यवस्था में किया गया सत्तास्थानों का विभाजन और धर्म द्वारा लादी गई मानसिक दासता। जो धर्माधीश थे, वही समाज सत्ताधीश थे और जो समाज–सत्ताधीश थे, वही धर्माधीश थे जीवन सत्य होने पर भी निष्क्रिय और उदासीन रहे। इसका कारण था उनकी अज्ञानमूलक और अंधी धर्मश्रद्धा! लोग समझते थे कि यही ईश्वर की इच्छा है और यही हमारे भाग्य में लिखा हुआ है।

पेशवा–राज्य के विलय के नौ वर्ष बाद (सन् 1827 में) महात्मा जोतिराव फुले का जन्म हुआ।

पेशवा–राज्य का अंत हो जाने पर अंग्रेजों का शासन शुरू हुआ। उन्होंने थोड़े ही दिनों में शासन को सुव्यवस्थित रूप दे दिया। यह काम बड़ी सर्तकता, दक्षता तथा चतुराई से किया। सबसे पहले उन्होंने भारत में प्रचलित, विभिन्न पेशाचिक परंपराओं और धरणाओं को समाप्त कर देने के उद्देश्य से कानून बनाये जिससे यहाँ की आम जनता आश्वस्त हो गई।

सन् 1829 में सती–प्रथा के विरूद्ध कानून बनाकर उसे सदा के लिये समाप्त कर दिया गया। फिर भी यह प्रथा कानून बनने के बाद भी लंबे समय तक चलती रही। सन् 1832 में धर्मातरण करने वालों को पूर्वधर्म के स्वजनों की जायदाद के अधिकार को कानूनी बनाया गया। जगन्नाथ पुरी के मेले के अवसर पर मंदिर के तीर्थोपाध्याय भक्तगणों पर बहुत जुल्म किया करते थे। जगन्नाथ–संस्थान का कारोबार भी बहुत अव्यवस्थित था। इसलिए सन् 1840 में एक कानून से उन जुल्मों और अव्यवस्था को समाप्त कर दिया गया।

राजपूतों तथा तत्समय अन्य कुछ जातियों में कन्या वध की भंयकर प्रथा थी। अंग्रेजों ने कानून से सन् 1832 में उस पर रोक लगा दी। सन् 1836 में एक कानून से ठगी (ठगों का व्यवसाय) पर प्रतिबंध लगाकर ऐसा प्रबंध किया गया कि यह शैतानी व्यवसाय फिर से अपना सर न उठाए। उड़ीसा जैसे प्रांतों के जंगली लोग अपने उपास्य देवता की कृपा प्राप्त करने के लिए अपनी जाति के बाहर के लोंगों को पकड़कर उनकी नरबलि दिया करते थे। यह नरमेध उस जंगली समाज का धार्मिक अधिकार ही माना जाता था। अंग्रेजों ने इसे हमेशा के लिए बंद कर दिया। मध्य प्रांत में कुछ पहाड़ी मंदिर थे। उन मंदिरों के पहाड़ों के कगार से कूदकर लोग अपने प्राण दे देते थे। लोंगो की धारणा थी कि ऐसा करने से मोक्ष मिलता है। उसे अंग्रेजों ने रोक दिया। गंगा तट पर मृत्यु होने से मोक्ष मिलता है, इस धारणा के कारण हजारों लोग आसन्न मरणावस्था में वहाँ पहुँच जाते थे। अंगेजों ने इस प्रथा पर प्रतिबंध लगाया।

अंग्रेजों ने अन्य प्रांतों में धार्मिक तथा सामाजिक सुधार करते समय जनमत की विशेष पर्वाह नहीं की, लेकिन महाराष्ट्र में सुधार करते समय उन्होंने फूँक– फूँक कर ही कदम उठाये। यही नहीं पेशवाओं के कार्यकाल में प्रचलित जातिभेदों तथा रूढ़ियों को बनाये रखने की ओर ही उनका झुकाव था, क्योंकि पेशवा–राज्य को हथियाने में ब्राह्मणों ने एल्फिन्स्टन की बहुत मदद की थी।

फिर भी, अंग्रजों ने लोंगो को प्रकट वचन दिया कि उनका शासन कानून तथा नियमों का शासन है, इसमें किसी के हित संबंधों पर बिना कारण आक्रमण नहीं किया जायेगा। इससे चारों और शांति और सुव्यवस्था स्थापित हो गई। आधुनिक ओद्योगिक युग में जाति–उपजाति का विचार समाप्त होने लगा और व्यक्ति को समाज की मूलभूत इकाई माना जाने लगा। साथ ही जाति–पाँति का विचार न करते हुए 'अपराध के अनुसार दंड का सिद्धांत कार्यान्वित होने लगा। 'कानून की नजर में सभी समान है'– यह दृश्य सबसे पहले अंग्रेजों के शासन में ही दिखाई देने लगा।

अंग्रेजों के आगमन से पहले, भारत में प्रजा को शिक्षा दिलाना सरकार का दायित्व नहीं माना जाता था, लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी ने सन् 1813 में निर्णय किया कि भारत के बचे हुए राजस्व से हर वर्ष कम से कम एक लाख रूपयें की राशि अलग निकाली जाए और उसका प्रयोंग भारत के प्राचीन साहित्य की सुरक्षा करने, पंडितों को बढ़ावा देने और भारत के निवासियों की शास्त्रों का ज्ञान दिलाने के लिए किया जाय। इस निर्णय के कारण भारत में पहली बार सभी के लिए शिक्षा के द्वार खुल गये और इस संक्रमण–काल में खुली पाठशालों के कारण ही जोतिराव को शिक्षा का अवसर मिला।

हमें यह जानकर प्रसन्नता है कि वर्तमान आजाद में हम पहले जो रहस्य लोग की धारणाओं से जीवन जीते थे, उनमें सुधार हुआ । हम अब स्वतंत्रता के युग में खाने–पीने पहनने पढ़ने लिखने काम करने मनोरंजन करने आगे बढ़ने के अवसर ही अवसर मिल गये है। हाँ हमारी निष्ठुरता के आवेश में रहने की आदत से यदि निजात नहीं पाते है तो फिर कौन आपको उन्नति के पथ–पर ले जा सकता है।

हमें महात्मा जोतीराव फुले सावित्रीबाई फुले बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर के बताये मार्गों का अपनाने की समझ बनाना होगी ।

रामनारायण चौहान

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान

ए-103, ताज अपार्टमेन्ट्स, गाजीपुर, दिल्ली -110096

फोन/फैक्स नं. 011-45082626, मो. : 09990952171

E-mail: phuleshikshansansthan@gmail.com Web: www.phuleshikshansansthan.org.

आजीवन सदस्यता फॉर्म

मैं महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ।

मैं अपनी आजीवन सदस्यता राशि रु. 3000/- / शिक्षादान की राशि रू. 11000/-स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, रोहिणी कोर्ट ब्रांच, दिल्ली, IFSC कोड नं. SBIN/0010323 के करन्ट एकाउंट नं. 32240494101 में जमा कर काउन्टर स्लिप संलग्न कर रहा/रही हूं।

मेरी जानकारी निम्नानुसार है :-

1. नाम
2. पिता/पति का नाम
3. जन्म तिथि 4. ब्लड ग्रुप
5. शिक्षा
6. व्यवसाय
7. वोटर कार्ड नं. 8. ड्राईविंग लाइसेंस नं.
9. आयकर पेन कार्ड नं. 10. आधार कार्ड नं.
11. स्थायी पता

पिन कोड

12. पत्र व्यवहार का पता

पिन कोड

13. फोन/फैक्स नं. 14. मोबाईल नं.
15. ई-मेल

Passport Size Photo

दिनांक: प्रभारी के हस्ताक्षर (कोड नं.) आजीवन सदस्य के हस्ताक्षर

कार्यालय उपयोग हेतु

श्री..... ने रसीद नं. ..... दिनांक ..... से रु. 3000/- जमा करा दिए है।

सदस्यता कोड नं.: आजीवन सदस्यता प्रदान की जाती है। अध्यक्ष कोषाध्यक्ष

सामाजिक चिंतन (भाग-29)

समाज में नशा करने वालों की विश्वसनीयता?

मानव जीवन को खुशहाल बनाकर प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन जीना चाहता है, और सुखमय जीवन जीने के लिए सभी अपनी –अपनी हैसियत से प्रयासरत रहते ही है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी खुशी के लिए अपनी मर्जी से खान–पान, पहनाव, साधन का उपयोग करने की स्वतंत्रता है। ऐसे में नशे की सामग्रीयाँ तम्बाकू, धूम्रपान, गुटका, गाँजा, भांग, दारू(शराब), अफीम, चरस, जैसी का उपभोग करना, स्वास्थ्य, खुशहाल जीवन के आवश्यक नहीं हैइनका सेवन करने के बिना ही शरीर का संचालन स्वतः हो सकता है। परमात्मा ने प्राणियों को जीवन जीने के अनेक साधन सुविधाएं इस प्रकृति से पाने की व्यवस्था की है। इसलिए नशे की वस्तुओं का उपभोग करने की आवश्यकता नहीं है।

यह चिन्तन करें कि पशु –पक्षियों का जीवन बिना नशे की वस्तुओं का सेवन किये बिना ही भरपूर जीते है, इन्हें किसी भी नशे की आवश्यकता नहीं होती है

किन्तु मानव जीवन चूँकि बुद्धि से संचालित होता है, इसलिए बुद्धि भी दोनों पक्षों की और चलती रहती है, एक और विकास की दिशा में दुसरे विनाश की दिशा में कुछ न कुछ हरकत करती ही रहती है। जब बचपन का समय रहता है, तो मानव को बाल्यकाल में भी किसी नशे की आवश्यकता नहीं होती है। जबकि जैसे – जैसे उम्र बढ़ती है यारी –दोस्ती होती है। ऐसे में ही जीवन की दिशा बनने लगती है, यदि परिवार का संस्कार नशा विहिन है, उनके बच्चे तो संस्कारित ही जीवन जीना सीख जाते है, और यारी दोस्ती को निभाते हुए भी किसी की लत में फँसते ही नहीं हैं, जबकि जिनके परिवार में संस्कार नहीं होते है उनके बच्चों का जीवन तो किसी भी दिशा में भटक जाता है। युवाकाल में जो मित्र नशा करते है उनकी संगत में आकर ऐसे युवा नशे की संगति में फस सकते है और जो नशेड़ी होते है, वे अपनी मण्डली बढ़ाना उनकी मजबूरी होती है । ऐसे में ही नशे की लत लग जाती है। यह किसी भी प्रकार से स्वास्थ्य के हित नहीं है।

फिर पशु पक्षी नशा नहीं करते है तो फिर मानव क्यों नशा करता है? यह चिंतनीय है।

हाँ विश्व के कुछ देशों में जलवायु का मुकाबला करने हेतु नशा करने की मजबूरी होती है, प्रचलन रहता है, उनके लिये स्वस्थ रहने के लिये नशा करना पड़ सकता हैकिन्तु जिन देशों की जलवायु बिना नशे के ही उत्तम–स्वास्थ्य जीवन जीने का परिवेश देती है वहाँ पर तो किसी भी नशे की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए ।

हम अपने भारत देश का ही उदाहरण लेवे हमें यहाँ कि ऐसी जलवायु है कि पर्यावरण की रक्षा करने, स्वास्थ्य जीवन, सुखमय जीवन, लम्बा जीवन जीने के लिये कोई भी नशा करना जरूरी नहीं है

यह भी एक पक्ष है कि या तो बहुत धनी लोग धन का उपयोग नशे की वस्तुओं पर करने में लाते है और जो गरीब है वे भी नशे की लत में जीव जीने लगते है। कुछ युवा और व्यवसाई उद्यमी किसी विषय पर बात चित करने हेतु भी पार्टियाँ करते समय नशा की वस्तुओं का माध्यम बनाते है। कई बार नशेड़ी आपसी झगड़े भी कर लेते है, और आपसी दुश्मन बन जाते है

हम देखते है कि हमारी सरकारे भी नशे को समाप्त करने हेतु ठोस पहल नहीं करती बल्कि नशे की सामग्रीयों से कर (टेक्स) ऊँची दर पर लेकर अपने राजस्व में आय बड़ा भाग वसूलती है। इसी कारण नशे की वस्तुओं को बेन (बन्ड) करने का उपाय ही नहीं करती है यह विडम्बना है

कई समाज नशे की सामग्रियों का उपभोग करने से परहेज रखते है इस कारण नशे की वस्तुओं से ऐसे समाज के लोग बच जाते है। और उनके संस्कारित बच्चे ऐसी दोस्ती बढ़ाते है जिनके बच्चे नशा नहीं करते किन्तु यारी दोस्ती में भी इनके बच्चे जाल में फंस जाते है। व नशे की और समाज का बड़ा हिस्सा फंसता जा रहा है। नशेडियों की विश्वसनीयता नहीं होती है

आइये चिंतन करे कि प्रत्येक मानव बिना नशा किये सुख स्वस्थ्य समृद्धि से जीवन जीने की आदत बनायें और नशे की वस्तुओं से सरकार का खजाना टेक्स के रूप में भरने के बजाय अपने बच्चों को शिक्षित उच्चशिक्षित कर सादगी पूर्ण जीवन से जीने की दिशा में ठोस कदम बढ़ाये ।

हमारे महापुरूषों की जीवनी से सीख लेकर आप अपना अपने परिवार का, अपने समाज का अपने देश का नाम रोशन करने हेतु नशामुक्त समाज बनाकर राष्ट्र का आदर्श स्थापित करने में योगदानी बनें ।

रामनारायण चौहान

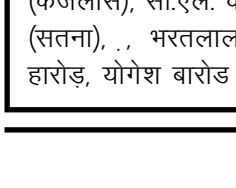

आपसी बात

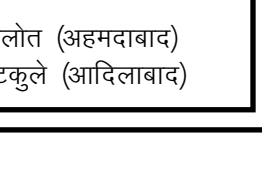

शिक्षा इशारा अब यह कालम इसलिये बना रहा है कि देश के अनेक भागों से मोबाइल/फोन पर बातचित होती है इसका रिकार्ड भी रखना फर्ज समझ रहा है। तो आइये मो. 09990952171 या फोन नं.01145082626 पर हमारे कार्यालय में जो भी बातचीत होगी उसके अंश प्रकाशित होते रहेंगें।

माह - सितम्बर से अक्टूबर 2019

● राजस्थान– हरगोपाल भाटी (झालावाड़), सांवरमल सैनी (सीकर), मांगीलाल पंवार, एड.अनुभव चन्देल, पूनमचन्द कच्छावा, बुधसिंह सैनी, मनीष गेहलोत , (जयपुर), बंशीलाल माली (भीलवाड़ा), भगवती माली (डेगाना), सुरेश कच्छावा (डीडवाना), मंगलचन्द सैनी (लाखेरी) पूर्व विधायक भगवान सहायक सैनी (चौमू), मोतीबाबा फुले, भंवर परिहार (फालाना), रामनारायण सोलंकी, सुनील परिहार, गजेन्द्र सोलंकी (जोधपुर),

● मध्य प्रदेश – जगदीश सैनी (जबलपुर), डॉ. प्रेमलता सैनी, आर.डी. माने, अविनाश फसाटे, राजा हारोड़, डॉ. छाया सैनी, (भोपाल), लीलाधर धारवे, गजानन्द रामी, गिरजाशंकर चौहान, सत्यनारायण कच्छावा, लक्ष्मीनारायण चौहान (उज्जैन), राजेश दौड़के (छिन्दवाड़ा), सी.एल. वर्मा (नागदा), लोकेश वर्मा (महू) सत्यनारायण चौहान, यादवलाल चौहान (इन्दौर), पुरूषोत्तम परमार (तराना), राजेश चौहान (कजलास), सी.एल. वर्मा (नागदा), पुरूषोत्तम अनुरागी (सतना), , भरतलाल कावरे (सिवनी), एड. पी.सी. हारोड़, योगेश बारोड (देवास), महेश सैनी, फकीरचन्द सैनी (मन्दसौर), नारायण यादव (हरसोला), विनोद मकवाना (बड़नगर)

● महाराष्ट्र– शंकरराव लिंगे, जयद्वीप लिंगे (सोलापुर), ।

● उत्तरप्रदेश– इन्जि. एस.बी. सैनी (कानपूर) श्रीचन्द सैनी, (मेरठ) चन्दनलाल श्रीमाली, सोहनलाल श्रीमाली (इलाहबाद),

● गुजरात / गंगाराम गेहलोत, (अहमदाबाद),।

● छत्तीसगढ़– हरीश पटेल(बालोद), ।

● बिहार– संजय मालाकार (पटना), बी.एन. सिंह सैनी (डेयरी–आन–सान), मदन मोहन भक्त (कटिहार)।

● हरियाणा– राजेन्द्र कुमार सैनी (लाड़वा), गणेश हारोड़ (गुड़गाँव)

● कर्नाटक – एन.एल. नरेन्द्र बाबू (बैंगलोर),

● दिल्ली– चौ.इन्दराजसिंह सैनी, खुशीराम सैनी, रमेश कुमार सैनी, जी.एल.सैनी, के.पी.सिंह, सी.ए., श्रीपाल सैनी, रवि हारोड़

● तमिलनाडू– व्ही. एम. पल्लव मोहम वर्मा (चैन्नई)।

● गुजरात– गंगाराम गेहलोत (अहमदाबाद)

● तेंलगाना– सुकुमार पेटकुले (आदिलाबाद)

महामना फूले डायरी-नवम्बर 2018

(128वीं पुण्य तिथि के अवसर पर)

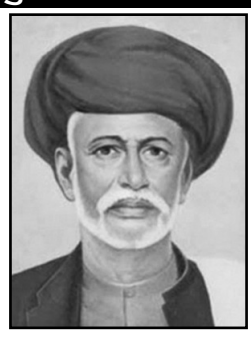

भूमिका :– अस्तित्व (प्रकृति) का नियम है कि जो अपने लिये जीता है वह पशुवत (मजदूरों जैसा) जीवन जीता है। वहीं दूसरी तरफ जिनका जीवन दूसरों के लिए (परस्वार्थ) तत्पर होता है वे मरने के बाद भी ध्रुव तारे की भांति अलग चमकते रहते है। महामना फूले का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी (Multidimensional) था। तभी तो वह समाज सधारक के साथ–साथ शिक्षा शास्त्री, लेखक, कृषि वैज्ञानिक, यूनियनिस्ट एवं परम धार्मिक व्यक्ति थे। इन्हीं तमाम गुणों के कारण बुद्ध के बाद उनको श्रेष्ठ मानव वादी कहा जाता है। संक्षेप में ऐसे महापुरुषों के लिये निम्न पंक्तियां सही चरितार्थ होती हैं :–

'खुद ही अपने जख्म सियेंगे,
पीडामृत के पूंट पियेंगे
तुम जी लो मरने से पहले, हम
मरने के बाद जियेंगे।'

महामना फूले से पूर्व भी भारत में समाज सुधारक तो थे परन्तु वे समाज सुधारक जैसे राजाराम मोहन राय, केशव प्रसाद सेन, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर कुलीन परिवारों से सम्बन्धित होने के कारण उनका लाभ शोषित, पीड़ित, बहुजन समाज के लोगों को नहीं मिल पा रहा था। इन लोगों को बहुजन पीड़ा का अनुभव कतई नहीं था, ठीक ही कहा गया –

'जाके पैर न फटी बिवाई वह
क्या जाने पीर पराई'

उनसे भिन्न महामना फूले ने भारत की 85: जनता को जाग्रत करने के लिए शिक्षा को आवश्यक समझकर 1848 में 21 वर्ष की अवस्था में अपनी धर्मपत्नी प्रातः स्मरणीया माँ सावित्री बाई फूले के साथ मिलकर पहला स्कूल पूना में खोला। इसके बाद पूना में ही अलग–अलग स्थानों पर कई स्कूल खोले।

समाज से अन्धविश्वास, पाखण्ड को मिटाने के लिए गुलामी, किसान का कोड़ा पुस्तक लिखकर 24 सितम्बर 1873 को 'सत्यशोधक समाजश की स्थापना की। महामना फूले में व्यक्तिगत पद प्रतिष्ठा का जरा भी लालच नहीं था। प्रमाण स्वरूप स्मरण कराना है कि 1885 में जब कांग्रेस की स्थापना हुई तो उस समय उनसे कांग्रेस में शामिल होने हेतु सम्पर्क किया गया था, परन्तु उन्होंने स्वीकृति नहीं दी। उन्हें भली भांति पता था कि राजनीति सभी समस्याओं की चाभी है फिर भी बिना सामाजिक आन्दोलन के नैतिकता पूर्ण राजनीति नहीं की जा सकती है।

महामना फूले का दृढ़ विश्वास था कि जिस राजनीतिक पार्टी के घोषणा पत्र के तराजू में एक पलड़े पर सत्य हो एवं दूसरे पलड़े पर सत्ता हो वही राजनीतिक पार्टी मानववादी, सर्वोदयी, विकासोन्मुखी सिद्ध होगी

महामना फूले आज यदि होते तो सुमित्रा महाजन (स्पीकर लोकसभा) को जवाब देते कि आप लोगों (सवर्ण–ब्राम्हणों) ने 3000 वर्ष तक सब अधिकारों का आरक्षण अपने पास रखा तब बहुजन ने कोई आन्दोलन चलाने की समझ नहीं थी, कम से कम 300 वर्ष तक तो आरक्षण इस देश में चलना ही चाहिये ताकि सभी को अपनी जातीय प्रतिशत के अनुसार समस्त पदों पर प्रतिनिधित्व मिल सके। SC/ST को अभी भी किसी ब्कतम (संवर्ग) में 15.7-5% आरक्षण प्राप्त नहीं है

हमारी मोटी–मोटी कमियां :– महामना फूले के द्वारा जो समाज का जाग्रति कार्य प्रारम्भ किया गया उसको दक्षिण भारत में पेरियार रामासामी ने तथा महाराष्ट्र, गुजरात में बाबा साहब ने खूब आगे बढ़ाया परन्तु उत्तर भारत जहाँ पाखण्ड, अन्धविश्वास की अधिकता है, वैज्ञानिक सोच की कमी है वहाँ पर इस कमी को दूर करने के लिए रामस्वरूप वर्मा (कानपुर उ0प्र0) तथा शहीद बाबू जगदेव सिंह कुशवाहा (बिहार) ने पहल की परन्तु यह कार्य अधिक गति नहीं पकड़ सकाउसका कारण रहा कि हम लोग सुविधाभोगी हो गये। आज कुर्मी, कुशवाहा, मौर्य, सैनी, माली समाज बीजेपी की जड़ों में पानी डालकर अपने विरोधी को सशक्त कर रहा है जो कि महामना फूले की सोच के विपरीत है।

सारांश :– महामना फूले के उत्तराधिकारी होने के लिए हम सबको शिक्षित बनकर दूसरों को शिक्षित करने एवं सामाजिक आन्दोलन सत्यशोधक समाज को गाँव–गाँव तक पहुँचाना चाहिए वर्तमान में महात्मा फूले सामाजिक शिक्षण संस्थान की स्थापना में सक्रिय सहयोग कर जीवन को महामना फूले की पुस्तक "सार्वजनिक सत्यधर्म" के अनुसार जीना चाहिएऐसा करने से सम्पूर्ण समाज, राष्ट्र महान बनेगा। सदा निम्न प्रेरक पंक्तियों को स्मरण रखें:

'बहुत जी लिये अब तक तख्तो
ताज के लिये
आओ करें कुछ कार्य समाज
सेवा के लिए।'

एस0बी0 सैनी (B.E.)
पूर्व मण्डल अभियन्ता BSNL
महामंत्री पंचशील सोसाइटी कानपुर
मो0: 9415407576

THE STUFE LEGENDS ARE MADE OF CYNTHIA STEPHEN

He lived up to this thinking.

Perhasps as a result of their childless state, the couple chowed a Sensitivity that was totally lacking in the society of the time, to the way women and children were treated. In orphaned children. Savirtribai looked unflaggingly after the children in the orphanage, as if She were their mother . She had no child of her Own but with her kind and generous disposition she tenderly and lovingly children to dinner often she was left among children," notes Dhananjay Keer in his biography of phule.

Importantly, the phule couple adopted a child, the son of a Brahman window in 1874. They had rescued ayoung Brahman woman who was going to commit suicide because she was pregnant. They took the woman into their home and promised to adopt the child when it was born. The boy Yashwant grew up as their son, and later became a doctor.

As A Social revolutionary

Jotiba And Savitri gained notoriety for their revolutionary activities among those with entrenched vested interests, but the poor and the oppressed took them to their hearts.

Their work rattled the religious and political elites of day. Keer, documents the incident of the assassination attempt made on phule . One night , two intruders &a mang (dalit) and akumbar (potter), carrying swords, crept into the bedroom of the couple as they slept . Phule ,a well-bulit and strong young man, awoke and got up. Savitribai also woke up, raised the wick of the lamp that burnt dimly in the room for light , and stood resolutely by his side. Phule asked them why they were there. They told him that they were there to take his life. He asked, "Why? What have I done to harm you ?" The men replied: " For what crime am I being give this sentence ?" he asked. "My wife and I have dedicated our lives for the betterment of the poor and the oppressed. If, by my death you are going to have some benefit, please do so," "They Promised to pay us one thousand rupee is a large sum and two poor families will bebefit from my death" By this time the men realized that phule was no ordinary individual. They fell at his feet and begged his pardon. They also asked him forgive them and to join him in his work which they did, and became his staunchest supporters. All through the encounter, Savitri firmly stood by Jotiba's side,

keeping her composure.

The Outstanding role of Phule in women's empowerment, especially widow,s welfare, has rightly been underscored by many historians. Child marriages were the norm in the society, and often very young girls and adolescents became widows due to the untimely death of their husband. The age of the widow was never taken into account and the tradition of treating a widow as a ritually impure, social outcaste, non-person who existed on the edge of society; was rigidly practiced. This caused her exploitation by the males of the family and she was defenceless against her exploition, but faced further disgrace if she happened to brcome pregnant as a result of the illiegitimate offspring. This cause the phule couple to set up a home for the welfare of unwed mothers and their offspring, in 1853, even as their educational activitiesd continued. Characteristically, phule advertised the service by putting up pamphlets with provocatively- worded announcements right in the Brahman section of the fear of the fear of bring exploited. Savitribai proved to be a caring mother to the women who found refuge in the home.

She is also known to have taken the lead in organizing the boycott by the barbers against shaving the heads of widow in the 1860s.

Phule founded the Satayashodhak Samaj as a sociospiritual movement on September 24,1873. Phule was convinced that the existing reform movements within Hinduism- the Brahmo Samaj, the Prathana Samaj, and the Arya samaj-continued to be the preserve of Brahmanism and ritualism. While the focus of the first was Brahm, the second focus of the third. In the case of phule, the focus was Truth-universal and emancipatory. The objective of the samaj was "to redeem shudras and atishudras from the influence of the brahmanical scripture, teach them their human right and liberate them from mental and religious slavery." The samaj declared: "All menare Children of God. There is no need for an intermediary or a priest to worship God. Many of the Supporters and lost government jobs, because Brahmans were their superiors - the secretary of the Samaj was given a punishment transfer to Mahabaleshwar!

Savitri headed the women's unit of Satayashodak Samaj. The Samaj took the lead in breaking the priestly hold over society by organizing a marriage without any role for the priest. On December 25, 1873, they organized a marriage between a young widower and the daughter of a woman who was a close friend of savitribai. Though there was some opposition, the wedding went ahed. A second wedding was also arranised an opposition well in advance, but phule proved to be more than their equal. Even though the bridegroom Sasne, almost backed out, phule organized police protection through a friend who was a lawyer, and another prominent person, and the wedding went ahead as planned.

Cont. Next Month

महात्मा फुले ब्राह्मणों के नहीं ब्राह्मणवाद के विरूद्ध थे

सामान्यतः सामाजिक शैक्षणिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतीराव फुले की जीवनी उनके कार्यों की जब बात आती है, तो यह अवधारणा बनी हुई है, कि फुले तो ब्रह्मणों के विरूद्ध थे, जबकि फुले की समझ स्पष्ट थी, उनके किसी भी ग्रन्थ में, उनके बारे में लिखे गये किसी भी साहित्य में ब्रह्मणों के विरूद्ध नहीं लिखा, वास्तविकता यह कि फुले ब्रह्मणवाद, पोंगा पंडितवाद, अवैज्ञानिक, तर्कहीन, साहित्य, तथाकथित दैववाद, अशिक्षा, अंधविश्वास, अश्प्रश्यता, असमानता, भेदभाव, कुरीतियाँ, कर्मकाण्ड मूर्तिपूजा, ढोंग, बेईमानी, भृष्टाचार, महिलाओं की दासता, नारी का अपमानजनक जीवन, आदि आदि बुराईयों के विरूद्ध उन्होने कमर कसली थी, और लिखने बोलने के किसी भी माध्यम से उन्होंने मानवता, विज्ञानवाद, सबको निशुल्क और रोजगार पूरक शिक्षा, स्वास्थ्य, सहकार, न्याय, ईमानदारी, सदाचार, परोपकार, जैसे मानव जीवन को सहज, सरल, रूप से जीने के लिए सम्पूर्ण जीवन न्योछावर कर दिया था ।

उनके साहित्य का अध्यन करने से ज्ञात होता है कि महात्मा फुले की मिशन में सभी जाति, धर्म वर्ण के लोगों का योगदान है। बचपन में उनका साथ मुस्लिम गफ्फार बेग, फातिमा शेख, क्रिश्च्यिन मिशेल एवं लिजिट साहेब सनातनी ब्राह्मण सदाशिव बल्लाल गोवंडे, मोरोपंत विट्ठल वालवेकर, सखाराम यशवंत पराजये, वासुदेव, बलवंत पड़के, लोकमान्य तिलक, न्यायमूर्ति माधव गोविन्द रानडे, बालशास्त्री जांभेकर गोपालहरि देशमुख, आदि के साथ जीवन की अनेक घटनाऐं, एक दुसरे के सहयोगी रहे।

फुले कट्टरता पूर्वक मानवतावाद की मिशन पूरा करने में जुटे रहे, उन्होंने कभी समझोता करके हार नहीं मानी, किन्तु उनके अनेक परिचितों ने समय के साथ समझोता करके घुटने टेक दिये थे। एक उदाहरण है किः–

दिनांक 4 अक्टूबर 1890 को पुणे की ''पंचकोट मिशन'' नामक ईसाई संस्था के सामरोह में पुणे के संभ्रात ब्राह्मण उपस्थित थे, उस समारोह में उस्थित ब्राह्मणों ने ईसाईयों की बनाई हुई, चाय पी, इसलिए कट्टरपंथियों ने उनको बहिष्कृत किया । उनमें लोकमान्य तिलक और माधव गोविन्द रानडे सम्मिलत थे। इस मामले शंकरर्चार्य ने एक आयेगा भेजा । रानड़े और तिलक ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया तिलक जी ने चाय पीने के बाद काशी जाकर प्रायश्चित किये जाने का प्रमाणपत्र प्रस्तुत किया। अन्य आठ लोगों ने दोष निवारर्णाथ प्रायश्ति के लिये आवेदन किया।

लोकमान्य तिलक चिरोल मुकदमों के मामले में इंग्लेण्ड गये थे, लोटने पर उन्होने सागरपार गमन का सन् 1919 में प्रायश्चित किया ।

राजा राममोहन राय आर्य समाज सुधारक माने जाते है, उन्होने नियम ही बनाया था, कि बह्यमों समाज के धर्म प्रचारक ब्राहम्ण ही होने चाहिए ।

इन उदाहरणों से पता चलेगा कि उस समय के लगभग सभी समाज सुधारक नेताओं ने, बहिष्कार के आगे गर्दने झुकाई थी।

किन्तु केवल जोतीराव ही ऐसे समाज सुधारक थे, जिन्होनें बहिष्कार की रत्तीभर भी चिंता नहीं की । वे निर्भिक जीवन जीना चाहते थे।

ब्राह्मणवाद के अनेक दोषों का फुले ने बहिष्कार ही नहीं किया वल्कि समतामय समाज रचना के लिये सर्व प्रथम शिक्षा का महत्तव सम्पूर्ण मानवता को समझाया और स्वंय ने ही अपनी पत्नि सावित्रीबाई फुले को शिक्षित कर प्रथम प्रशिक्षिक शिक्षिका बनाकर विद्यालय प्रारम्भ कर 18 विद्यालय संचालित कियें, फुले का कार्य और व्यवहार में कोई अन्तर नहीं होता था, वे निडर होकर मानवतावाद के लिए संघर्ष शील रहे। उन्होनें घिसी पीटी धार्मिक अवधारणाओं से मुँह मोड़कर मानवता, समता भाव, जाग्रत करने के लिए सार्वजनिक सत्यधर्म की स्थापना की 24 सितम्बर 1873 को ''सत्यशोधक समाज'' बनाकर समाज की एवं रीतिरिवाज में आमूलचूल परिवर्तन कर दिये जो सहज सरल सबको समझने व मानने लायक थे । उनके द्वारा स्थापित सत्यशोधक रीति के अनेक संस्कार आज भी अपना रहे हैं ।

हमारे देश में यदि फुले नहीं होते तो पाखण्ड के जीवन से मानव को कब निजात मिलती यह गर्त में छिपा ही रहता । फुले ने सभी धर्मों के ग्रन्थों का अध्यन कर मानवता धर्म की अवधारणा से सामाजिक क्रान्ति की है । आज शिक्षा और नारी शिक्षा के खुले द्वार का हम भारतवासी लाभ उठा रहे है। इसका सम्पूर्ण श्रेय फुले दम्पत्ति को ही जाता है । खासकर शूद्रों तथा नारी को शिक्षा–समानता– मानवता के जो अधिकार हमारे संविधान में बाबा साहेब ने हमें दिये है।, ये भी उनके गुरू महात्मा फुले के जीवन उनके कार्य उनके रचित ग्रन्थों को पढ़–समझ कर ही संविधान के रूप में मानव समाज को मिले है।

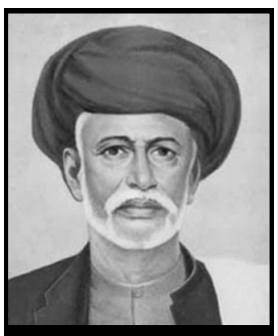

28 नवम्बर महात्मा फुले का 189 वीं परिनिर्वाण दिवस

महात्मा जोतीराव फुलों पर जितना भी शोध किया जाय वह सब प्रेरणा दायक है, प्रत्येक मानव अपने जीवन में फुले के आदर्श उतारकर आचरण करने लायक बन जाय तो दरिद्रता, भूख, अशिक्षा, अंधविश्वास से छूटकारा मिल सकता है।

इसलिए भारत के प्रायः सभी लोग चाहते है, कि फुले दम्पत्ति को भरत रत्न दिया जाय। प्रसन्नता है कि महाराष्ट्र चुनाव के संकल्प पत्र में भाजपा ने फुले दम्पत्ति को भारत रत्न दिये जाने का संकल्प लिया है। इसी प्रकार अनेक प्रदेशों के मुख्य मंत्री, मंत्री विधायक केन्द्र के सांसद मंत्री, समाज सेवी संस्थाऐं निरन्तर भारत सरकार से मांग करती है कि ''फुले दम्पत्ति को भारत रत्न'' दिया जाय।

फुले का सम्पूर्ण जीवन ब्राह्मणवाद के विरूद्ध भरा पड़ा हैं वे ब्राह्मणों के भी साथि थे । फुले के जीवन से प्रेरणा लेकर मानवता से जीने का लाभ मिलता है। हम फुले दम्पत्ति के त्रृणी है।

28 नवम्बर 1890 को फुले का परिनिर्वाण हुआ। उनको नमन ।

देश भर के समाचार

● तिजारा (राज.)– माध्यमिक विद्यालय में 6 अक्टोबर को द्वित्तीय प्रतिभा सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि दिलबाग सिंह सैनी अध्यक्ष ऑल इंडिया सैनी सेवा समाज धर्मसिंह सैनी तथा अध्यक्षता श्यामलाल सैनी ने करते हुए सर्व समाज की प्रतिभाओं को फुले गौरव अवार्ड से सम्मानित किया ।

● दिल्ली – 1 दिसम्बर को पूर्वी दिल्ली सैनी सभा का वार्षिक समारोह गौरी शंकर मंदिर दिलशाद गार्डन में आयोजित है, इस अवसर पर प्रतिभावन विद्यार्थियों का सम्मान एवं वैवाहिकी स्मारिका का प्रकाशन होगा। जी.एल. सैनी प्रधान राजुमार सैनी उपाध्यक्ष एवं शिवराज सैनी महामंत्री ने उक्त जानकारी दी । सम्पर्क– एवं 9811833182, 9810655117 ।

● मेहकर बुलढाणा (महा.)– 3 नवम्बर को माली समाज वधु–वर परिचय सम्मेलन एवं सत्यशोधक सामुहिक विवाह समारोह होगा सम्पर्क किरन इंगोले 9822522448

● जोधपुर (राज.)– समाजसेवी भगवान सिंह परिहार के नाम से मार्ग का नामकरण मुख्यमंत्री अशोक गेहलोत जी द्वारा 8 अक्टूबर को किया ।

● नागपूर (महा.)– 17 नवम्बर को माली समाज द्वारा राज्य स्तरीय युवक युवति पालक परिचय सम्मेलन । सम्पर्क गोविन्द वैराले 7709515555 कैलाश जामगड़े 9021687619ए मधुसूदन देशमुख 9423104941 ।

● यमुना नगर (हरि.)– धानपुरा गाँव की कोमल सैनी को पीयू स्थित युनिवर्सिटी इस्टियूट ऑफ फार्मस्युटिकल सांइसेस की युके की युनिवर्सिटी ऑफ सेन्ट्रल लंकाशायर प्रस्टन में दवाईयों पर रिसर्च करेगी । बधाई

● बिल्लोर (उप्र.)– अर्पणा सैनी ने पीसीएस परीक्षा उत्तीर्ण करली अब वे बीडीओ पद पर कार्य करेगी । उसके पिता वैष्णव नगर निवासी शिवगोपाल सैनी तहसील एसडीएम ऑफीस ने निजी कर्मचारी है। बधाई ।

● अबोहर (पंजाब) श्री सैनी का मिस वर्ल्ड अमरीका प्रतियोगिता के लिये चयन होने पर क्षेत्र में खुशी है।

● मथुरा(उप्र.)– महात्मा ज्योतिराव फुले विकास समिति फुले विकास समिति द्वारा ग्यारवाँ आदर्श सामूहिक विवाह समारोह 8 नवम्बर को श्री गुरू काष्णिय सरस्वति शिशु मंदिर महावन में आयोजित है। सम्पर्कः– रमेश सैनी 8923511243, रामदयाल सैनी 6395408598, त्रिलोकीनाथ एड. 9412627529 गुड्डू सैनी 9961084585 ।

● फलटण (महा.)– 29 दिसम्बर को महाराष्ट्र माली समाज महासंघ द्वारा वर–वधु व पालक परिचय सम्मेलन महाराजा मंगल कार्यालय लक्ष्मी नगर में आयोजित सम्पर्क दशरथ सदाशिव फुले सम्पादक महामित्र 9823272523

● लखनऊ (उप्र.)– 5जनवरी को अ.भा. कुशवाहा महासभा का प्रादेशिक सम्मेलन इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान गोमीती नगर में पत्रिका का विमोचन एवं प्रतिभा सम्मान व अन्य प्रस्तावों पर विचार होगा । राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश महतो, प्रधान महासचिव विनोद कुशवंशी कोषाध्यक्ष लोकमन कुशवाहा इन्जिनियर इन्द्रदेव मौर्य ने उक्त जानकारी दी ।

● धुले (महा.)– जिला माली समाज द्वारा 22 दिसम्बर को युवक–युवति परीचय सम्मेलन का उदघाटन दादा साहेब दिगम्बर पांडू माली करेंगे। सम्पर्क डी.पी. महाजन 9130786860 ।

● गोपीगंज (उप्र.)– 9 नवम्बर को अ.भा. श्रीमाली महासभा उप्र. इकाई की मिटिंग है। उक्तजानकारी इन्द्र प्रसाद श्रीमाली महामंत्री ने दी ।

● टोंक (राज.)– विराट नगर में प्रतिभा सम्मान समारोह में महात्मा फुले बिग्रेड के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामसिंह सैनी ने शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला ।

● लातूर(महा.)– 24 नवम्बर को ''महात्मा फुले समाजरत्न पुरस्कार'' महात्मा फुले स्मृतिदिन आयोजन समिति द्वारा प्रदान किया जायेगा। उक्त जानकारी दत्ता माली ने दी ।

● अमरपुरा नागौर(राज.)– संत शिरोमणि लिखमीदास जी महाराज स्मारक विकास संस्थान माली सैनी समाज राज्यस्तरीय प्रतिभा समान समारोह तथा भक्त चरित्र कथा व नानी बाईरो मायरो कथा आयोजन 1 से 5 दिसम्बर को होगा। राजेन्द्र गेहलोत (पूर्वमंत्री) मोतीबाबा फुले राधाकिशन तंवर, हरिशचन्द्र देवड़ा कमल किशोर भाटी ने बताया कि उक्त आयोजन अमरपुरा में होगा । सम्पर्क– 9587828144 ।

● डीडवाना (राज.)– 8 नवम्बर को सैनी (माली) विकास संस्थान द्वारा प्रथम सामूहिक विवाह सम्मेलन मालियान सूर्य मंदिर सिंधी बास में आयोजित है। सम्पर्क 9828788986, उक्त जानकारी रामेश्वर मारोठिया ने दी ।

● भीलवाड़ा (राज.)– 13 अक्टूबर को माली (सैनी) महासभा द्वारा समाज के प्रतिभावन विद्याथियों एवं समाज सेवियों लगभग 400 प्रतिभाओं को वनमंत्री सुखराम विश्नोई महासभा के चेयरमेन औंकारराम कच्छावा ताराचन्द गेहलोत, सेवाराम दग्धि, किशन गेहलोत, मंगलप्रसाद चौहान, औंकारमल माली किया । सामूहिक विवाह समारोह के वर–वधुओं की एफ.डी.आर. वितरण की गई । जिला अध्यक्ष गोपाललाल माली (पत्रकार) बंशीलाल माली, योगेश कन्हैयालाल बुलिवाल, व दिनेशचन्द्र गोपाल ने संचालन किया।

● समस्तीपुर (बिहार)–अभिनंदन कुशवाहा का इसरों में वैज्ञानिक पद पर चयन होने पर बधाई ।

● रोहतक (हरि.) – राष्ट्रीय सैनी पंचायत के अध्यक्ष प्रीतम सैनी का ए.ए.जी. का द्वित्तीय सैनी, अधिकारी, कर्मचारी, इनजिनियर, डॉक्टर, वकील एवं उद्योग पतियों ने सम्मान किया ।

● अलवर (राज.)– 25 फरवरी को 23वाँ अखिल भारतीय सैनी सामूहिक विवाह समारोह आयोजित निरंजनलाल सैनी पूरणलाल सैनी, रमेशचन्द्र सैनी, रूपकिशोर सैनी, जितेन्द्र खुराडिया ने उक्त जानकारी दी ।

● सांगली (महा.)– 3 नवम्बर को वीरशे माली वर–वधु सम्मेलन । उक्त जानकारी डॉ.के.पी.माली अप्पासाहेब वाले एड. तुकाराम किवड़ इन्जि. अण्णासो माली, विजयराव धुलबुलू एम बी माली भड़कबे ने दी।

● बांदी कुई (राज.) – महात्मा फुले जंयति मनाने एवं नवम सामूहिक विवाह समारोह करने की तैयारियाँ चल रही है। उक्त जानकारी केशवलाल सैनी ने दी ।

● सवाई माधोपुर (राज.)– अलीजापुर 19. 20 अक्टूबर को सगरवंशिय माली समाज द्वारा वाइक यात्रा रामनारायण माली हिम्मत माली रतनलाल माली के नेतृत्व में हुई।

● जयपुर(राज.)– 22 अक्टूबर राजस्थान प्रदेश माली सैनी महासभा के अध्यक्ष छुट्टन लाल सैनी ने मुख्यमंत्री अशोक गेहलोत से भेंट कर महात्मा फुले की प्रतिमा एलिवेटेड रोड़ के कारण अल जगह तिलम सल के रेस्टोरेन्ट की खाली भूमि पर शिफ्ट करने का ज्ञापन दिया ।

● नागपूर (महा.)– अखिल भारतीय माली महासंघ के मधुसूदन देशमुख जिला अध्यक्ष गोविंद वैराले प्रदेश कार्याध्यक्ष रोहिणीताई पाटिल महिला प्रदेशाध्यक्ष, कैलाश जामगड़े प्रदेश महामंत्री बनने पर सत्कार किया। ।

● गढ़ चिरोली (महा.)– जिला माली समाज द्वारा 24 सितम्बर से 28 नवम्बर तक जोती संदेश धरोधरी अभियान चलाया जा रहा है। उक्त जानकारी आनन्दराव मारोती कोटरंगे द्वारा दी गई ।

● नजीबाबाद मण्डावली (दिल्ली)– लेखन प्रतियोगिता का शुभारम्भ अन्तर्राष्ट्रीय सैनी समाज संगठन के जिला अध्यक्ष अनिल सैनी, महिला अध्यक्ष सीता सैनी ने किया और बच्चों को पुरस्कृत किया ।

● गोरखपुर (उप्र.)– 20 अक्टूबर को अशोक छात्रावास पोखर भिण्डा में सम्राट अशोक संभागार का लोकापर्ण आयोजित अंधवेशन के अतिथियों ने किया ।

● लक्ष्मणगढ़ (राज.)– श्रीमती सरोज सैनी पत्नि मनोज कुमार सैनी का भारतीय स्टेट बैंक में चयन होने पर बधाई ।

● कुरूक्षेत्र (हरियाणा)– सैनी समाज भवन में 1 नवम्बर को महाराजा शूर सैनी जंयति समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. विशनलाल सैनी विधायक विशिष्ट अतिथि गुरूदयाल सिंह सैनी पूर्व सांसद श्रीमती कैलाश सैनी पूर्व सांसद बलवीर सिंह सैनी पूर्व मंत्री अतरसिंह सैनी पूर्व मंत्री डॉ. पवन सैनी, पूर्व विधायक साहब सिंह सैनी पूर्व विधायक ने समाज को शिक्षित होने का आव्हान किया । गुरनाम सिंह सैनी प्रधान कुशल पाल सैनी सचिव ने उक्त जानकारी दी ।

● सादड़ी (राज.)– 2 एवं 3 नवम्बर को माली समाज भवन रणकपुर रोड़ का उद्घाटन एवं लोकापर्ण समारोह हुआ। उक्त जानकारी राम गोपाल सैनी ने दी ।

● मेहकर (महा.)– रमेश भाऊ कार्यालय अखिल भारतीय माली महासंघ ने बताया कि 2 नवम्बर को महासंघ की मिटिंग आयोजित हुई ।

● सागर (मप्र.)– 5 नवम्बर को आलॅ इंडिया सैनी माली सभा के आयोजन में राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदीश सैनी ने भाग लिया । उक्त जानकारी दिलीप सैनी ने दी ।

● भैंसलाय इन्दौर (मप्र.)– हिन्दूसिंह चौहान परिवार ने अपने पिता भेरूसिंह चौहान की स्मृति में साढ़े सात हजार वर्ग फीट भूमि समाज की धर्मशाला के लिये दान की। जिसकी अनुमानित कीमत 90 लाख रूपये है। स्मरण रहे परिवार ने पगड़ी रस्म एवं बड़ा भोज नहीं देकर अच्छा उदाहरण दिया है। उक्त जानकारी विकास ने दी ।

● काटोल (महा.)– संत सावता माली संस्था द्वारा सर्व शाखीय माली खोजा ले आऊट में 1 दिसम्बर के अध्यक्ष पंजाबराव दंढोरे, उद्घाटन एड. राजेन्द्र महाडोले प्रमुख अतिथि गोविंदन्दराव वैराले नत्थु गाडगे होंगे ।

● पांढुरना (मप्र.)– 23 से 30 जनवरी तक हनुमान मंदिर संत रविदास मार्ग में संत सावता महाराज की मूर्ति स्थापना समारोह आयोजित ।

● जोधपुर(राज.)– 8 अक्टूबर को सुनील परिहार के नेतृत्व प्रतिभा सम्मान समारोह में अशोक गेहलोत मुख्यमंत्री ने सम्मानित किया । एवं बच्चो को शिक्षित करने का आव्हान किया ।

● भीलवाड़ा– (राज.)– नगजीराम सैनी ने बताया कि माली समाज क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित की गई ।

● जयपुर (राज.)– भगवान मार्ग स्वेज फार्म जयपुर स्थित सर्किल का नाम नगर निगम द्वारा ''सावित्री बाई फुले सर्किल'' 26 सितम्बर से कर दिया उक्त जानकारी मनफूल सिंह सैनी अध्यक्ष सिविल राईटस सोसाइटी द्वारा दी। बधाई ।

संकलन

रामलाल कच्छावा
कोषाध्यक्ष

3 नवम्बर को नारायण राव मेघाजी लोखंडे को मजदूर क्रांति के जनक की उपाधी पर

कविता

असा भव्य चमत्कार
नाही धरती ही ओली
नाही ओले ही अंबर
जणु माझ्या स्वागताला
आला मास नोहेंबर ।।धृ।।
माझ्यासाठी नोहेंबर
आला घेऊनी खबर
मंगलेचं व्हावं बर
अशी खबर जबर।।१।।

जोति–साऊंची मी पोर
अशी नशिबाची थोर
त्यांच्या पुण्याईने झाली
येथ वरची सफर।।२।।
थोर थोरांची थोरवी
मला त्यांची काय सर
त्यांची लाभली उपाधी
गांवामधे मेहकर ।।३।।
छोटे मोठे पुरस्कार
थोर लाभले सत्कार
कसा घडला कळेना
असा भव्य चमत्कार ।।४।।

-- सौ. मंगला मधुकर रोकडे.
'शब्दस्रुष्टी', मास्तरवाडी,
नेहरु नगर, देवपूर, धुळे.

शास्त्र और शस्त्र

किसी समाज को अगर गुलाम बनाना हो तो उसके पांच बल निकाल दो, वह परमानेट गुलाम बन जायेगा. और वह पांच बल है। बुद्धी, धन, बाहुबल (जाती– जाती मे बाटना), सांस्कृतिक बल (उनके पुर्वजों का इतिहास), मनोबल (मन मारकर भाग्य –भगवान के झुले मे बिठा देना) और मनुष्य के यह पांच बल निकाल देने के लिये दो चिजो की जरुरी होती है। एक है शास्त्र तथा दुसरा है शस्त्र अर्थात शास्त्र से (धर्मशास्त्र) मनुष्य का मन मारा जाता है और शस्त्र से उसका शरीर और ब्राह्म्ण यही दो साधनो को हमेशा अपने पास रखता है. अर्थात धर्म की वह ढाल (अपनी रक्षा के लिए) बनाता है और राजनिती को तलवार बनाता है दुसरों को (दुश्मन) काटने के लिये और लडाई के लिये ढाल और तलवार (याने शास्त्र तथा शस्त्र) यही दो साधनो की जरुरत होती है. अब तो समझ गये ना अपने गुलामी का रहस्य?

प्रबोधनकार – अरविंद माळी नागपूर